

महर्षिवेदव्यासप्रणीत

श्रीनरसिंहपुराण

(सचित्र, हिन्दी-अनुवादसहित)



गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीनरसिंहपुराणकी विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-	प्रयागमें ऋषियोंका समागम; सूतजीके प्रति भरद्वाजजीका प्रश्न; सूतजीद्वारा कथारम्भ और सृष्टिक्रमका वर्णन.....	७	११-	मार्कण्डेयजीद्वारा शेषशायी भगवान्का स्तवन	४२
२-	ब्रह्मा आदिकी आयु और कालका स्वरूप.....	१२	१२-	यम और यमीका संवाद	४८
३-	ब्रह्माजीद्वारा लोकरचना और नौ प्रकारकी सृष्टियोंका निरूपण	१४	१३-	पतिव्रताकी शक्ति; उसके साथ एक ब्रह्मचारीका संवाद; माताकी रक्षा परम धर्म है, इसका उपदेश.....	५१
४-	अनुसर्गके स्रष्टा	१७	१४-	तीर्थसेवन और आराधनसे भगवान्की प्रसन्नता; 'अनाश्रमी' रहनेसे दोष तथा आश्रमधर्मके पालनसे भगवत्प्राप्तिका कथन	५६
५-	रुद्र आदि सर्गों और अनुसर्गोंका वर्णन, दक्ष प्रजापतिकी कन्याओंकी संततिका विस्तार	१८	१५-	संसारवृक्षका वर्णन तथा इसे नष्ट करनेवाले ज्ञानकी महिमा	५८
६-	अगस्त्य तथा वसिष्ठजीके मित्रावरुणके पुत्ररूपमें उत्पन्न होनेका प्रसङ्ग	२३	१६-	भगवान् विष्णुके ध्यानसे मोक्षकी प्राप्ति का प्रतिपादन	५९
७-	मार्कण्डेयजीके द्वारा तपस्यापूर्वक श्रीहरिकी आराधना; 'मृत्युञ्जय-स्तोत्र' का पाठ और मृत्युपर विजय प्राप्त करना	२७	१७-	अष्टाक्षरमन्त्र और उसका माहात्म्य .	६३
८-	मृत्यु और दूतोंको समझाते हुए यमका उन्हें वैष्णवोंके पास जानेसे रोकना; उनके मुँहसे श्रीहरिके नामकी महिमा सुनकर नरकस्थ जीवोंका भगवान्को नमस्कार करके श्रीविष्णुके धाममें जाना.....	३३	१८-	भगवान् सूर्यद्वारा संज्ञाके गर्भसे मनु, यम और यमीकी, छायाके गर्भसे मनु, शनैश्चर एवं तपतीकी उत्पत्ति तथा अश्वारूपधारिणी संज्ञासे अश्विनीकुमारोंका प्रादुर्भाव	६६
९-	यमाष्टक—यमराजका अपने दूतके प्रति उपदेश	३६	१९-	विश्वकर्माद्वारा १०८ नामोंसे भगवान् सूर्यका स्तवन	६८
१०-	मार्कण्डेयका विवाह कर, वेदशिराको उत्पन्न करके प्रयागमें अक्षयवटके नीचे तप एवं भगवान्की स्तुति करना; फिर आकाशवाणीके अनुसार स्तुति करनेपर भगवान्का उन्हें आशीर्वाद एवं वरदान देना तथा मार्कण्डेयजीका क्षीरसागरमें जाकर पुनः उनका दर्शन करना.....	३८	२०-	मारुतोंकी उत्पत्ति	७२
			२१-	सूर्यवंशका वर्णन	७३
			२२-	चन्द्रवंशका वर्णन	७४
			२३-	चौदह मन्वन्तरोंका वर्णन	७६
			२४-	सूर्यवंश—राजा इक्ष्वाकुका भगवत्प्रेम; उनका भगवद्दर्शनके हेतु तपस्याके लिये प्रस्थान	७९
			२५-	इक्ष्वाकुकी तपस्या और ब्रह्माजीद्वारा विष्णुप्रतिमाकी प्राप्ति	८२
			२६-	इक्ष्वाकुकी संततिका वर्णन	८९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२७-	चन्द्रवंशका वर्णन.....	९१	४६-	परशुरामावतारकी कथा	१६८
२८-	शान्तनुका चरित्र	९३	४७-	श्रीरामावतारकी कथा—श्रीरामके जन्मसे लेकर विवाहतकके चरित्र	१७१
२९-	शान्तनुकी संततिका वर्णन.....	९६	४८-	श्रीराम-वनवास; राजा दशरथका निधन तथा वनमें राम-भरतकी भेंट	१८३
३०-	भूगोल तथा स्वर्गलोकका वर्णन.....	९८	४९-	श्रीरामका जयन्तको दण्ड देना; शरभङ्ग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्यसे मिलना; शूर्पणखाका अनादर; सीताहरण; जटायुवध और शबरीको दर्शन देना ..	१९६
३१-	ध्रुव-चरित्र तथा ग्रह, नक्षत्र एवं पातालका संक्षिप्त वर्णन.....	१०३	५०-	सुग्रीवसे मैत्री; वालिवध; सुग्रीवका प्रमाद और उसकी भर्त्सना; सीताकी खोज और हनुमान्का लङ्कागमन.....	२०७
३२-	सहस्रानीक-चरित्र; श्रीनृसिंह-पूजनका माहात्म्य	११५	५१-	हनुमान्जीका समुद्र पार करके लङ्कामें जाना, सीतासे भेंट और लङ्काका दहन करके श्रीरामको समाचार देना	२१९
३३-	भगवान्के मन्दिरमें झाड़ू देने और उसको लीपनेका महान् फल—राजा जयध्वजकी कथा	११६	५२-	श्रीराम आदिका समुद्रतटपर जाना; विभीषणकी शरणागति और उन्हें लङ्काके राज्यकी प्राप्ति; समुद्रका श्रीरामको मार्ग देना; पुलद्वारा समुद्र पार करके वानरसेनासहित श्रीरामका सुवेल पर्वतपर पड़ाव डालना; अङ्गदका प्रभाव; लक्ष्मणकी प्रेरणासे श्रीरामका अङ्गदकी प्रशंसा करना; अङ्गदके वीरोचित उद्धार और दैत्यकर्म; वानर वीरोंद्वारा राक्षसोंका संहार; रावणका श्रीरामके द्वारा युद्धमें पराजित होना; कुम्भकर्णका वध; अतिकाय आदि राक्षस वीरोंका मारा जाना; मेघनादका पराक्रम और वध; रावणकी शक्तिसे मूर्च्छित लक्ष्मणका हनुमान्जीके द्वारा पुनर्जीवन; राम-रावण-युद्ध; रावण-वध; देवताओंद्वारा श्रीरामकी स्तुति; सीताके साथ अयोध्यामें आनेपर श्रीरामका राज्याभिषेक और अन्तमें पुरवासियोंसहित उनका परमधाम गमन	२२४
३४-	भगवान् विष्णुके पूजनका फल.....	१२३			
३५-	लक्षहोम और कोटिहोमकी विधि तथा फल	१२७			
३६-	अवतार-कथाका उपक्रम.....	१२९			
३७-	मत्स्यावतार तथा मधु-कैटभ-वध...	१३०			
३८-	कूर्मावतार; समुद्रमन्थन और मोहिनी-अवतार.....	१३३			
३९-	वाराह-अवतार; हिरण्यक्ष-वध	१३७			
४०-	नृसिंहावतार; हिरण्यकशिपुकी वरदान-प्राप्ति और उससे सताये हुए देवोंद्वारा भगवान्की स्तुति.....	१३८			
४१-	प्रह्लादकी उत्पत्ति और उनकी हरि-भक्तिसे हिरण्यकशिपुकी उद्विग्नता.....	१४३			
४२-	प्रह्लादपर हिरण्यकशिपुका कोप और प्रह्लादका वध करनेके लिये उसके द्वारा किये गये अनेक प्रयत्न	१४८			
४३-	प्रह्लादजीका दैत्यपुत्रोंको उपदेश देना; हिरण्यकशिपुकी आज्ञासे प्रह्लादका समुद्रमें डाला जाना तथा वहीं उन्हें भगवान्का प्रत्यक्ष दर्शन होना.....	१५२			
४४-	नृसिंहका प्रादुर्भाव और हिरण्यकशिपुका वध	१६०			
४५-	वामन-अवतारकी कथा.....	१६४			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
५३-	बलराम-श्रीकृष्ण-अवतारके चरित्र...	२३४		स्थान	२६८
५४-	कल्कि-चरित्र और कलि-धर्म	२४१	६३-	अष्टाक्षर-मन्त्रके प्रभावसे इन्द्रका	
५५-	शुक्राचार्यको भगवान्की स्तुतिसे पुनः			स्त्रीयोनिसे उद्धार	२७०
	नेत्रकी प्राप्ति	२४५	६४-	भगवद्भजनकी श्रेष्ठता और भक्त पुण्डरीकका	
५६-	विष्णुमूर्तिके स्थापनकी विधि	२४७		उपाख्यान	२८२
५७-	भक्तके लक्षण; हारीत-स्मृतिका आरम्भ;		६५-	भगवत्सम्बन्धी तीर्थ और उन तीर्थोंसे	
	ब्राह्मणधर्मका वर्णन	२५२		सम्बन्ध रखनेवाले भगवान्के नाम...	२९२
५८-	क्षत्रियादि वर्णोंके धर्म और ब्रह्मचर्य		६६-	अन्यान्य तीर्थों तथा सहायि और	
	तथा गृहस्थाश्रमके धर्मोंका वर्णन ...	२५४		आमलक ग्रामके तीर्थोंका माहात्म्य .	२९४
५९-	वानप्रस्थ-धर्म	२६४	६७-	मानस-तीर्थ, व्रत तथा इस पुराणका	
६०-	यति-धर्म	२६५		माहात्म्य	२९८
६१-	योगसार	२६६	६८-	नरसिंहपुराणके पठन और श्रवणका	
६२-	श्रीविष्णु-पूजनके वैदिक मन्त्र और			फल	३०१